मृदा शिल्पकार

खेतों से मृदा उठाते, रौंद-रौंद वे मिलाते,
अपनी हथेलियों से, चाक में बिठाते हैं।
वृत्ताकार घूम घूम,पहिए में झूम झूम,
सुंदर आकृतियों की, मटकी बनाते हैं।।

प्रातःकाल जल्दी जागे, नींद चैन सब त्यागे,
बैठ सभी बाजारों में, स्वेद वे बहाते हैं।
बढ़ती ऊष्मा में सारे, सिर्फ ईश के सहारे,
छोटी-छोटी झोपड़ी में, रात वे बिताते हैं।।

कभी धूप कभी छाया, सहती उनकी काया,
तृष्णा स्वयं त्याग सुख, लोगों को दिलाते हैं।।
एक-एक पैसा गिन, मेहनत रात दिन,
माटी में ही काम कर, माटी मिल जाते हैं।।

कॉकरोच

कॉकरोच की सुनो कहानी।
करते हैं अपनी मनमानी।।
कोने-कोने में छिप जाएं।
सभी मित्र अपने सँग लाएं।।

अर्धरात्रि सब बाहर आए।
इक दूजे से भेंट लगाए।।
इर्द-गिर्द कर भागादौड़ी।
लगे घूमने जोड़ी-जोड़ी।।

दावत इनकी लगी रसोई।
लिपटे सब आटे की लोई।।
भोजन को जूठा कर जाते।
फूड पॉइज़न ये फैलाते।।

तभी अचानक मम्मी जागी।
हाय राम! चिल्लाती भागी।।
मन ही मन तरकीब लगाई।
काँकरोच की नहीं भलाई।।

आज सभी को मजा चखाऊँ।
अपने घर से इन्हें भगाऊँ ।।
जल्दी से वो हिट ले आई।
कोने-कोने में छिड़काई।।

अफरा तफरी ऐसी छाई।
सोचे क्या आफत है आई।।

इक दूजे से वे टकराते।

कॉकरोच सब गिरते जाते।।

सुध बुध खोकर दौड़ लगाते।

ना आने की कसमें खाते।।

जान बचाकर सारे भागे।

कोई पीछे कोई आगे।।

मजदूर दिवस पर विशेष

एक मजदूर की कहानी

मेरे हाथों से जो ना बना हो ,ऐसा कोई आशियाना नहीं
घर बड़े तो बनाता हूँ मैं,पर खुद का कोई ठिकाना नहीं

सबका पेट भरता हूँ मैं,और दिन रात एक करता हूँ मैं
पर अपने बच्चों के लिए ,झोली में मेरे कोई दाना नहीं

तमाम उम्र गुजार दी मैंने , सूरज की कड़कती धूपों में
पलों में जो थकान उतारे,बना कोई ऐसा बिशोना नहीं

खूब जलता हूँ गर्मी में मैं , और ठंड में बड़ा ठिठुरता हूँ
जीवन में मेरे आया अब तक कोई मौसम सुहाना नहीं

जिन कॉलेजों की बिल्डिंग को, शहर बनाने मैं जाता हूँ
उनमें बच्चों को पढ़ाने लिए ,जेब में एक भी आना नहीं

यूं तू हर कोई लिख रहा ,दास्तान अपने लफ्जों में मेरी
पर जो सही दशा लिखे,बना कोई ऐसा अफसाना नहीं

शिक्षा से मेरे जीवन में दिलबर,आ सकती खुशाली है
शिक्षा से ही जीवन उठाना, कभी इसको गिराना नहीं

कुलविंदर दिलबर